सामाजिक विज्ञान

(इतिहास)

अध्याय-2: आखेट-खाद्य संग्रहण से भोजन उत्पादन तक

SHIVOM CLASSES 8696608541

आरंभिक मानव

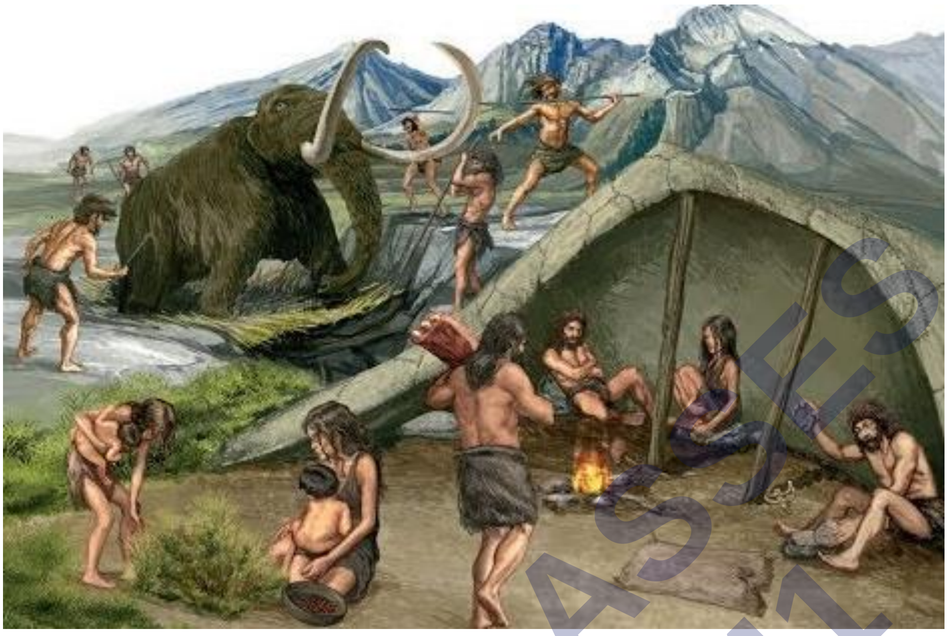

प्राचीन सभ्यताओं के बारे में अध्ययन करने से पता चलता है कि जो लोग इस उपमहाद्वीप में बीस लाख साल पहले रहा करते थे। आज हम उन्हें आखेटक-खाद्य संग्राहक के नाम से जानते हैं। भोजन की व्यवस्था का इंतज़ाम करने की विधि के आधार पर उन्हें इस नाम से पुकारते हैं। आमतौर पर खाने के लिए वे जंगली जानवरों का शिकार करते थे, मछलियाँ और चिड़िया पकड़ते थे, फल, दाने, पौधे-पत्तियाँ, अंडे इकठा किया करते थे। जब एक जगह इन चीजों की कमी महसूस होती तो वे दूसरी जगह तलाश करते थे।

पुराणी सभ्यताओं के बारे में पुरातत्त्वविदों को कुछ ऐसी वस्तुएँ मिली हैं जिनका निर्माण और उपयोग आखेटक-खाद्य संग्राहक किया करते थे। यह संभव है कि लोगों ने अपने काम के लिए पत्थरों, लकड़ियों और सींगों के औज़ार बनाए हों |

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

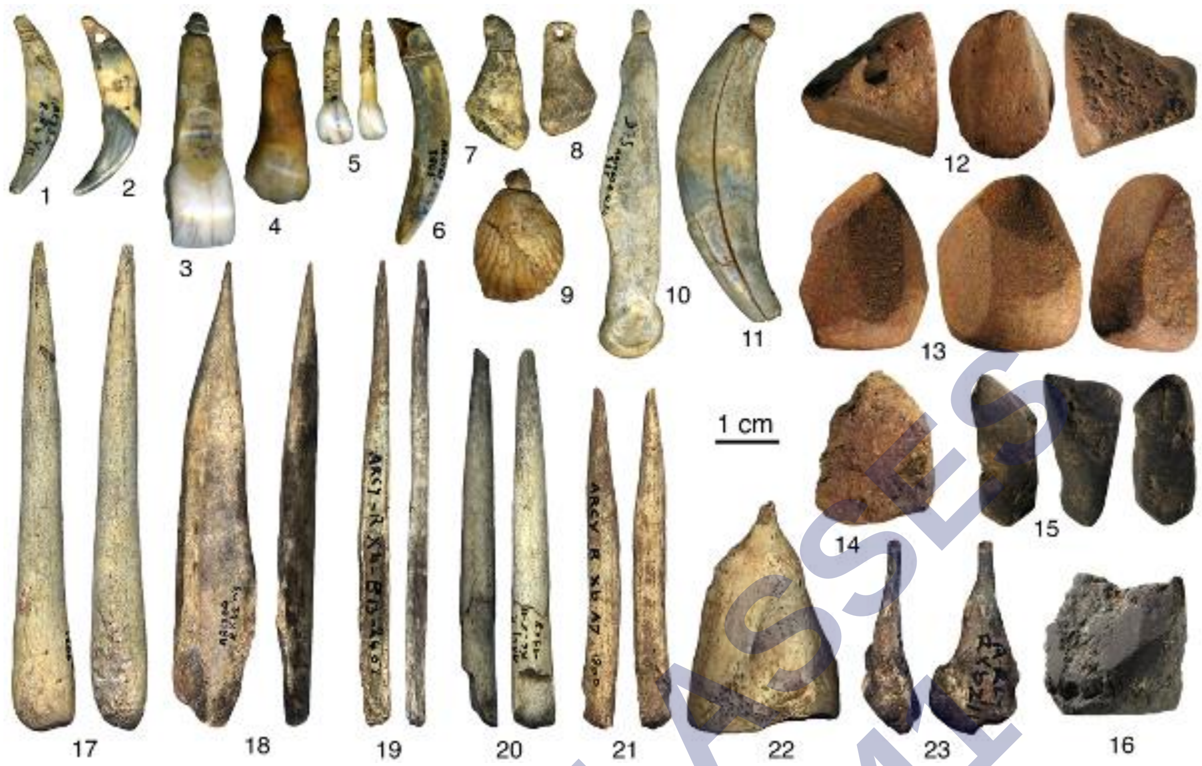

इनमें से पत्थरों के औज़ार आज भी बचे हैं। कहीं-कहीं उत्खनन में लोहे और ताम्बे के हथियार व बर्तन भी मिले हैं

जिनके आधार पर उस समय की सभ्यता और मानव के बारे में जाने का मौका मिलता है। बाद की सभ्यताओं में रहने के भवन और कहीं तो पुरे नगरों का निर्माण भी मिलता है जैसे हडप्पा और मोहनजोदड़ो की सभ्यताएं।

आंरभिक नगर

SHIVOM CLASSES 8696608541

आखेटक – खाद्य संग्राहक – यह इस महाद्वीप में 20 लाख वर्ष पहले रहते थे इन्हे यह नाम भोजन का इंतजाम करने की विधि के आधार पर दिया गया है भोजन (जनवरो का शिकार, मच्छलियाँ, चिड़ियाँ, फल -फूल, दाने, पौधों -पतियाँ, अंडे इत्यादि। आखेटक शिकारियों को कहते हैं।

यह लोग अपने काम के लिए लकड़ियों, पत्थर और हड्डी के औजारों का प्रयोग करते थे।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का कारण :-

- भोजन की तलाश में इन्हे एक स्थान से दूसरे स्थान जाना पड़ता था।
- चारा की तलाश में या जानवरों का शिकार करते थे हुए एक स्थान से दूसरे स्थान ।
- अलग-अलग मौसम में फल की तलाश पानी की तलाश में।
- इन लोगो ने काम के लिए पत्थरो, लकड़ियों और हड्डियों के औजार बनाए थे।

पुरास्थल

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

पुरास्थल वे स्थान हैं जहां पूर्व मानव गतिविधि प्रकट होती है।

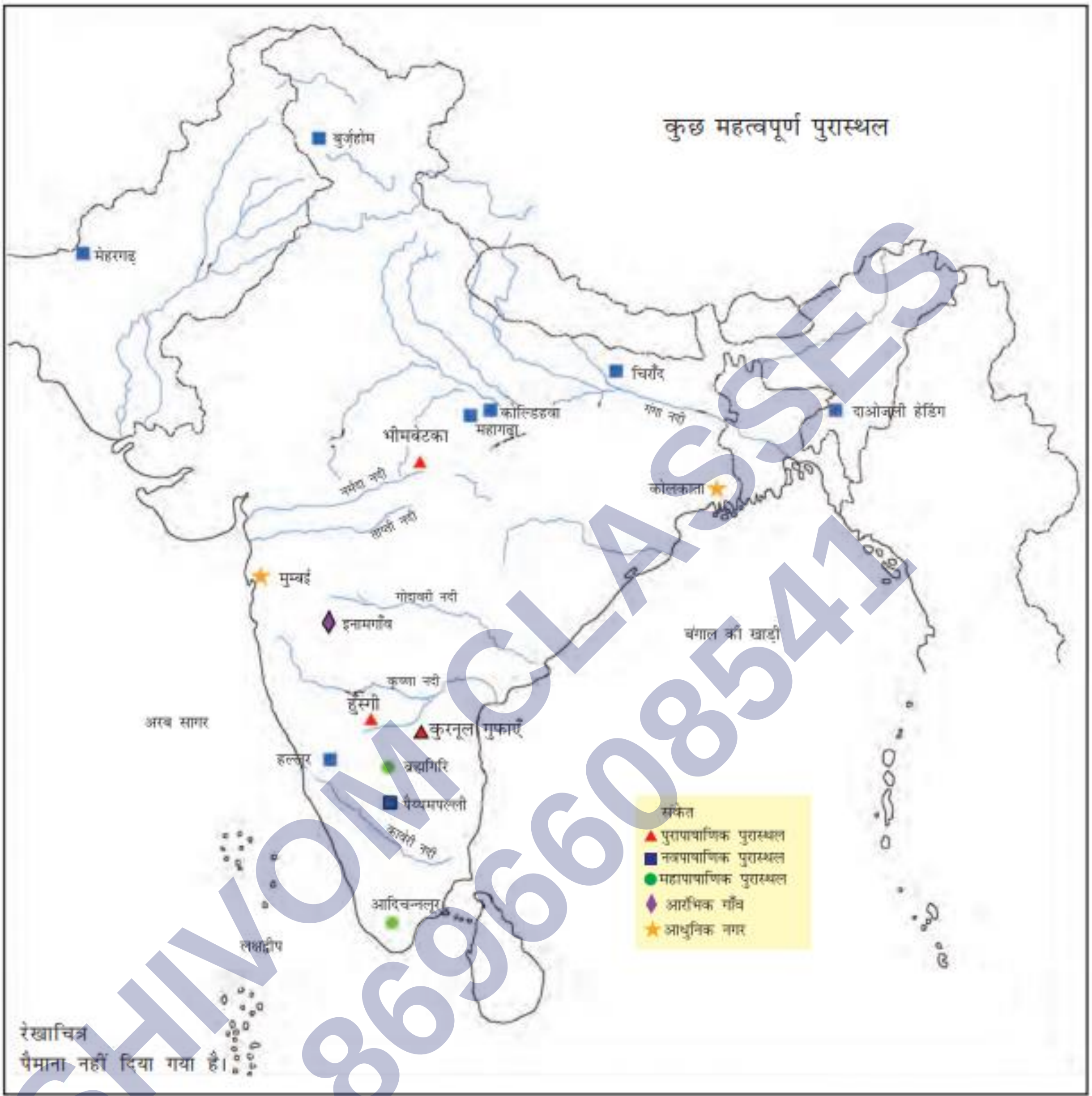

साइटों के भीतर घटनाओं के संभावित साक्ष्य में संरचनात्मक विशेषताएं, कलाकृतियां, मैक्रो- और सूक्ष्म वनस्पतियों और जीवों के साथ-साथ आणविक साक्ष्य जैसे लिपिड, डीएनए और स्थिर आइसोटोप शामिल हैं। खुदाई से पहले या बाद में स्थलों के संरक्षण और संरक्षण की आवश्यकता हो सकती है।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

पुरातात्विक स्थलों की प्रचुरता, वित्तीय संसाधनों के बदलते पैटर्न और खोजी वैज्ञानिक तकनीकों में लगातार सुधार का मतलब है कि आधुनिक पुरातात्विक संसाधन प्रबंधन, विशेष रूप से यूरोप और उत्तरी अमेरिका में, खुदाई के बजाय न्यूनतम हस्तक्षेप के साथ साइटों को संरक्षित करना चाहता है। उस स्थान को कहते है जहाँ औजार, बर्तन और इमारतें जैसी वस्तुओं के अवशेष मिलते है।

भीमबेटका

मध्य प्रदेश इस पुरास्थल पर गुफाएँ व कंदराएँ मिली है

SHIVOM CLASSES 8696608541

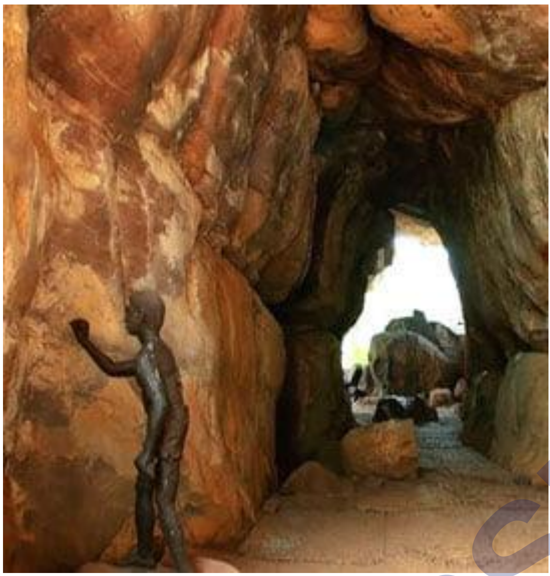

जहाँ लोग रहते थे नर्मदा घाटी के पास स्थित है। भारत के मध्य-प्रदेश राज्य के रायसेन जिले में एक पुरापाषाणिक पुरातात्विक स्थल है। जो मध्य-प्रदेश राज्य की राजधानी भोपाल के दक्षिण-पूर्व में लगभग 46 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। भीमबेटका यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों में से एक है और इस स्थल को सन 2003 में वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित किया जा चुका है। इस प्रकार की सात पहाड़ियाँ में से एक भीमबेटका की पहाड़ी पर 750 से अधिक रॉक शेल्टर (चट्टानों की गुफ़ाएँ) पाए गए है जोकि लगभग 10 किलोमीटर के क्षेत्र में फैले हुए है। भीमबेटका भारतीय उपमहाद्वीप में मानव जीवन की उत्पत्ति की शुरुआत के निशानों का वर्णन करती है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

इस स्थान पर मौजूद सबसे पुराने चित्रों को आज से लगभग 30,000 साल पुराना माना जाता है। माना जाता है कि इन चित्रों में उपयोग किया गया रंग वनस्पतियों का था। जोकि समय के साथ-साथ धुंधला होता चला गया। इन चित्रों को आंतरिक दीवारो पर गहरा बनाया गया था।

कुरनूल गुफा

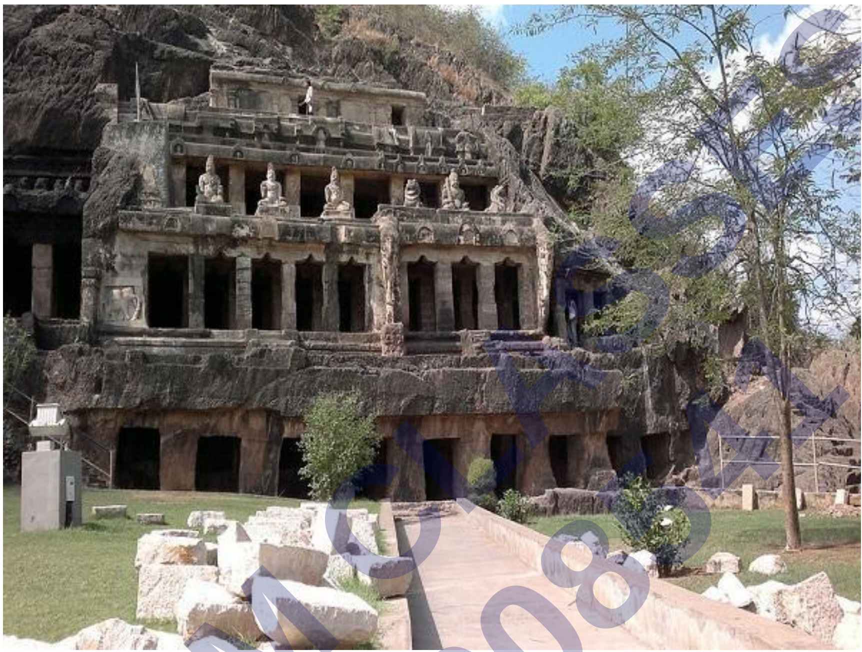

आंध्र प्रदेश यहाँ राख के अवशेष मिले है। इसका इस्तेमाल प्रकाश, मांस, भुनने व् खतरनाक जानवरो को दूर भगाने के लिए होता था।

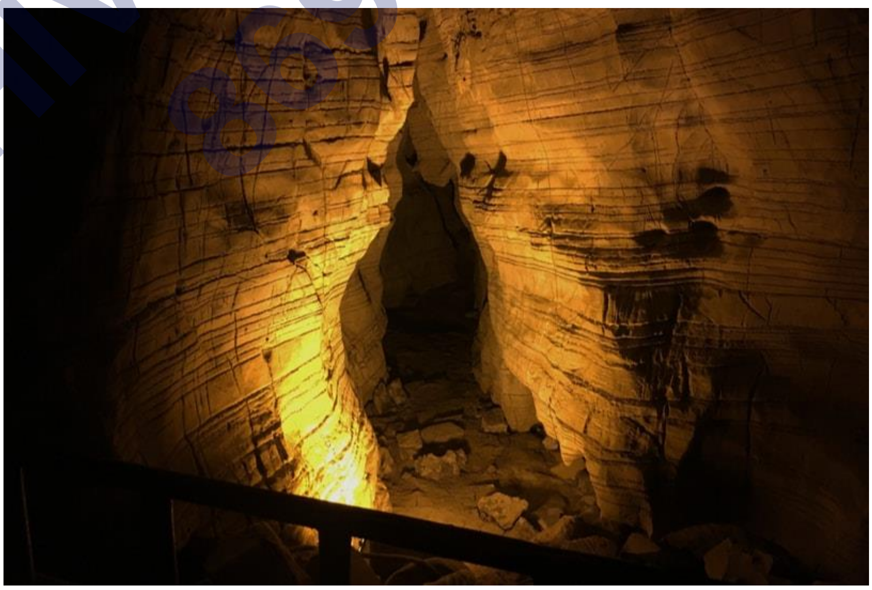

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

लगभग 12000 साल पहले जलवायु में बड़े बदला आए और इसके परिणामस्वरूप कई घास वाले मैदान बनने लगे और हिरण।, बारहसिंघा, भेड़, बकरी, गाय जैसे जानवरो की संख्या में बढ़ोतरी हुई और मछली महत्वपूर्ण स्त्रोत बना।

प्रारंभिक पशुपालक व कृषक के साक्ष्य

- बुर्जहोम – कश्मीर
- मेहरगढ़ – पाकिस्तान
- चिरांद – बिहार
- कोल्डिहवा – मध्य प्रदेश
- दाओजली – असम

बुर्जहोम

(वर्तमान कश्मीर में) लोग गड्ढे के निचे घर बनाते थे जिन्हे गर्तवास कहा जाता है।

मेहरगढ़

मेहरगढ़ में बस्ती का आरंभ 8000 साल पहले यह स्थान ईरान जाने वाले रस्ते में महत्वपूर्ण था यह बोलन दर्रे के पस एक हरा भरा समतल स्थान है।

इस इलाके में सबसे पहले जौ, गेंहूँ, भेड़, बकरी पलना सीखा – यहाँ चौकोर तथा आयताकार घरो के अवशेष भी मिले है।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

मेहरगढ़ में कब्रों के स्थ सामान भी रखे जाते थे एक कब्र में मानव के साथ एक बकरी भी दफनाई गई है।

पुरापाषाण

यह दो शब्दों " पूरा " यानि ' प्राचीन ' पाषाण यानि ' पत्थर ' से बना है – इसे तीन भागो में बाँट सकते है। ' आरंभिक ',' मध्य ',' एवं उत्तर ' पुरापाषाण युग जिस काल में पत्थर का प्रयोग किया जाता था उसे पाषाणकाल कहा जाता है । पाषाणकाल, मानव के उद्भव एवं विकास का काल है। मानव के प्रारंभिक काल के विषय में जो पुरात्विक साक्ष्य मिलते हैं उनमें पाषाण निर्मित उपकरणों की अधिकता के कारण ही इसे पाषाणकाल कहा जाता है।

पुरापाषाण काल 20,00000 -12,000 – आरंभिक काल को कहते है।

मध्यपाषाण काल 12,000 -10,000 –इस काल पर्यावरणीय बदलाव मिलते है।

नवपाषाण 10,000 साल पहले – अगले युग की शुरुआत

पाषाणकाल के प्रकार

भारतीय पुरातत्वविदों ने भी अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से पाषाणकाल को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

1. पुरापाषाणकाल
2. मध्यपाषाणकाल
3. नवपाषाणकाल

1. पुरापाषाणकाल

पुरापाषाण काल मानव के तकनीकी विकास का काल है। इस काल का समय-मान दीर्घकालिक है। इस सुदीर्घकाल में धीरे-धीरे अनेक तकनीकी परिवर्तन घटित हुए। इन तकनीकी परिवर्तनों एवं काल-क्रम आदि को ध्यान में रखते हुए एवं पुरातात्विक उत्खननों से प्राप्त पाषाण उपकरणों के अध्ययन के पश्चात् पुरापाषाणकाल को भी पुरातत्व वेत्ताओं ने भागों में विभाजित किया जो इस प्रकार हैं।

- **निम्न पुरापाषाण काल -** निम्नपुरापाषाण काल के विषय में सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध अनुसंधान का प्रारंभ फ्रांस से हुआ इसीलिए फ्रांस में प्रचलित प्रागैतिहासिक षब्दावली को मानक के रूप में स्वीकार किया जाता है। फ्रांस मंे पुरापाषाण काल के प्रथम सोपान के लिए निम्न पुरापाषाण काल षब्द का प्रयोग किया गया है।
- **मध्यपुरापाषाण काल -** मध्य पुरापाषाण काल का एक प्रमुख पुरातात्विक लक्षण यह है कि इस काल के अधिकांश पाषाण उपकरण प्रायः फलक-निर्मित हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि विधिवत् तैयार किये गये क्रोडों से फलक निकालने की परम्परा का सर्वप्रथम विकास तत्कालीन विश्व के उत्तरी परिक्षेत्र में हुआ जिसमें उत्तरी फ्रीका तथा पश्चिमी एशिया से लेकर पश्चिमी, मध्यवर्ती एवं पूर्वी यूरोप के क्षेत्र सम्मिलित माने जा सकते हैं।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- **उच्च पुरापाषाण काल -** पूर्ववर्ती पुरापाषाणिक कालों की तुलना में उच्च पुरापाषाण काल अथवा श्रेष्ठ पाषाण काल के संबंध में अधिक जानकारी प्राप्त है। पाषाण उपकरणों के निर्माण की तकनीकी प्रगति, मानव के शारीरिक एवं सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से यह काल अत्यन्त उल्लेखनीय है। कलात्मक अभिरुचि की अभिव्यक्ति भी इस काल में सर्वप्रथम दृष्टिगोचर होती है। यूरोप के अनेक क्षेत्रों तथा पश्चिमी एशिया में अप्रत्यक्ष संघात प्रविधि से निर्मित पतले एवं समानान्तर पार्श्व वाले ब्लेड इस काल की उपकरण परम्परा के प्रमुख तत्व के रूप में सामने आते हैं। इन

ब्लेडों का निर्माण नालिकायुक्त क्रोडो से प्रायः किया जाता था। बहुप्रयोजनीय उपकरणों का स्थान अत्यन्त विशिष्ट प्रकार के उपकरणों ने ले लिया।

गिरमिट या ब्यूरिन इस काल का एक अत्यन्त विशिष्ट किस्म का उपकरण माना जाता है जिसका उपयोग हड्डी, सींग, हाथीदांत और लकड़ी आदि को तराशने, नक्काशी एवं छेद इत्यादि करने के लिए किया जाता था। तकनीकी विकास के इतिहास में उच्च पुरापाषाण काल के मानव का विशिष्ट स्थान है।

यूरोप में उच्च पुरापाषाण काल को श्रेष्ठ पाषाण काल कहा जाता है।

इस काल के विशिष्ट प्रकार के पाषाणिक उपकरणों, कलात्मक पुरावषेषों तथा गुफा का निर्माता पूर्ण विकसित 'होमो सेपियन मानव' को माना जाता है। ये पुरावषेष उच्च प्रातिनूतन काल के भूतात्विक विभिन्न स्तरों से उपलबध हुए हैं यही कारण है कि उच्च पुरापाषाण काल षब्द का प्रयोग आफ्रीका तथा दक्षिण एषिया की प्रायः मिलती-जुलती पाषाणिक संस्कृतियों के लिए नहीं किया जाता है। इन क्षेत्रों की संस्कृतियों के लिए उत्तर पुरापाषाणिक षब्द का प्रयोग अधिक सार्थक एवं उपयुक्त प्रतीत होता है।

2. मध्य पाषाण काल

मध्य पाषाण काल, मानव संस्कृति के उस काल से संबंधित है जो कि सर्वनूतन काल के प्रारम्भिक समय में उच्च पुरापाषाण कालीन संस्कृति के बाद विकसित हुआ है। इस काल को पुरापाषाण काल तथा नव पाषाणकाल के बीच का संक्रान्ति काल भी कहते हैं। यह काल लगभग

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

दस हजार ई. पू. से प्रारम्भ होकर पाँच-छः हजार ई.पू. के बीच माना जाता है। पुरापाषाण काल में मानव ने अनेक प्रकार के उपकरणों का निर्माण किया तथा कला के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति की परन्तु उसे

आर्थिक क्षेत्र में अधिक सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। उच्च पुरापाषाण में उसने सामूहिक रूप से विशालकाय पशुओं का षिकार करके अपनी खाद्य समस्या को एक सीमा तक हल कर लिया, तथा बचे हुए समय का सदुपयोग कला के क्षेत्र में व्यतीत किया किन्तु फिर भी पुरापाषाणकालीन मानव प्रकृतिजीवी ही रहा। इस समय तक मानव इस बात से अनभिज्ञ था कि किस प्रकार कृषि तथा पशुपालन के माध्यम से प्रकृति को अधिक खाद्य सामग्री प्रदान करने के योग्य बनाया जा सकता था। यूरोप तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में मानव सभ्यता पुरापाषाण काल के पश्चात एक अन्य संस्कृति में परिवर्तित हो जाती है जिसे मध्य पाषाण काल के नाम से जाना जाता है।

3. नवपाषाण काल

मानव के सांस्कृतिक इतिहास में नवपाषाण काल, पाषाण युग का अंतिम चरण है। भौतिक प्रगति की दिषा में इस काल का महत्वपूर्ण स्थान है। यूरोप में प्रातिनूतन काल के अन्त एवं सर्वनूतन काल के आरम्भ में जब भूमि वनों से आच्छादित हो रही थी। तब वहाँ के उच्च पुरापाषाण काल के मानव बदली हुई परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के प्रयास में मध्यपाषाण कालीन संस्कृति में रहे। इसी समय पश्चिम एशिया तथा उत्तरी आफ्रीका में भी महत्वपूर्ण भौगोलिक परिवर्तन हुए। उन परिवर्तनों का प्रभाव मानव के रहन-सहन पर भी पड़ा। इसीलिये

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

इस काल के समाजों ने, जिन्हें आजीविका की पर्याप्त सुविधाएँ नहीं थीं, ऐसे क्रांतिकारी कदम उठाये कि एक नवीन अर्थव्यवस्था में मानव जीवन बदल गया जिसके परिणामस्वरूप एक अधिक उन्नत संस्कृति विकसित हो गई। जिसे पुरातत्ववेत्ता ''नवपाषाण काल'' तथा जाति विज्ञान ''बर्बर युग'' कहते हैं। इस काल के पूर्व तक मानव अपनी उदरपूर्ति के लिये पूर्णरूपेण प्रकृति पर निर्भर था। इस काल में उसने पहली बार कृषि तथा पशुपालन के द्वारा स्वयं खाद्य पदार्थों का उत्पादन करना प्रारम्भ किया। खाद्योत्पादन से एक सच्ची आर्थिक तथा तकनीकी क्रान्ति का जन्म हुआ। इन साधनों ने समाज के सम्मुख खाद्य समस्या की पूर्ति का एक सम्भावीय विकल्प प्रस्तुत कर दिया। पुरापाषाण काल तथा मध्यपाषाण काल के बर्बर समाजों को प्रकृति कृपा से प्राप्त खाद्यान्न, सीमित मात्रा में मिलते थे। इसी कारण मानव आबादी भी सीमित रहती थी। परन्तु नव पाषाणकाल में कम से कम भूमि से अधिक अन्न का उत्पादन करके उसी अनुपात में बढ़ती हुई आबादी का भरण-पोषण किया जा सकता था।

इसके अतिरिक्त इस काल में मानव ने वनों से प्राप्त लकड़ी से नाव, मकान तथा कृषि कर्म में आने वाले औजार अर्थात् काष्ठकला, मृदभांडकला तथा कपड़ा बुनना जैसी कलाओं का आविष्कार भी किया। इन सब उद्योगों में उसे नये ढंग के मजबूत उपकरणों की आवश्यकता पड़ी। इसी कारण नवपाषाण काल में मानव ने पाषाण उपकरणों को अभीष्ट आकार देने के लिए फलकीकरण के पश्चात् गढ़ना, घिसना तथा चमकाना जैसी विधियाँ सीखीं। इन उपकरणों के कारण पुरातत्ववेत्ता इस युग को नवपाषाण काल के नाम से पुकारते हैं।

आग की खोज

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

आग की खोज आदिमानव काल में ही हो गयी थी क्योकि जंगलो में रहने वाले आदिमानव जंगली जानवरों से बचने के लिए आग का उपयोग करते थे और कहा जाता है की आदिमानव ने आग की खोज पत्थर को रगड़ के की थी जब वो पत्थर को एक स्थान से दुसरे स्थान तक ले जा रहे थे तो गलती से पत्थर एक दुसरे के उपर गिरे और आदिमानव ने पत्थरों के टकराने से उत्पन्न चिनगारियाँ को देखा होगा

उस समय आदिमानव इसे डरता था लेकिन धीरे धीरे उनको इसका उपयोग करना सिखा और शुरु में आदिमानव यदि कहीं गुफाएँ होतीं तो मनुष्य उन्हीं में रहने लगते थे। अन्यथा वे बड़े पेड़ो की पत्तों वाली शाखाओं के बीच अपने लिए शरण-स्थान बना लेते थे। उन्हे दो चीजों का भय रहता था-मोसम और जंगली जानवरों का। आदि मानव नहीं जानता था कि बादल क्यों गरजते हैं या बिजली क्यों चमकती है। और, जब किसी चीज का कारण समझ में नहीं आता, तो आदमी उससे भयभीत रहता है। बाघ, शेर, चीता, हाथी और गैंडे जैसे खूँखार जानवर जंगलो में घूमते-फिरते रहते थे।

इन जानवरों की तुलना में मनुष्य कमजोर थे, इसलिए उन्हें या तो गुफाओं और पैड़ो में छिपकर अपनी रक्षा करनी पड़ती थी या फिर अपने अनगढ़ हथियारो से उन्हें मार डालना पड़ता था। परन्तुं इन जानवरो से रक्षा का सर्वोत्तम् उपाय था आग रात के समय जब सभी प्राणी गुफा में जमां हो जाते, तो गुफा के मुहँ पर आग जलाई जाती थी। आग के डर से जानवर गुफा के भीतर नहीं आते थे। शीतकाल में तूफानी रातों में आग ही उन्हें आराम तथा सुरक्षा प्रदान करती थी।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

लेकिन जब तक आदिमानव ने इसको नियंत्रण करना नही सिखा तब तक इसका उपयोग नही हुआ आग का प्रयोग लगभग 125,000 साल पहले पता चला

और उत्पन्न करने की एक और विधि थी घर्षणविधि से आग उत्पन्न करने की सबसे सरल और

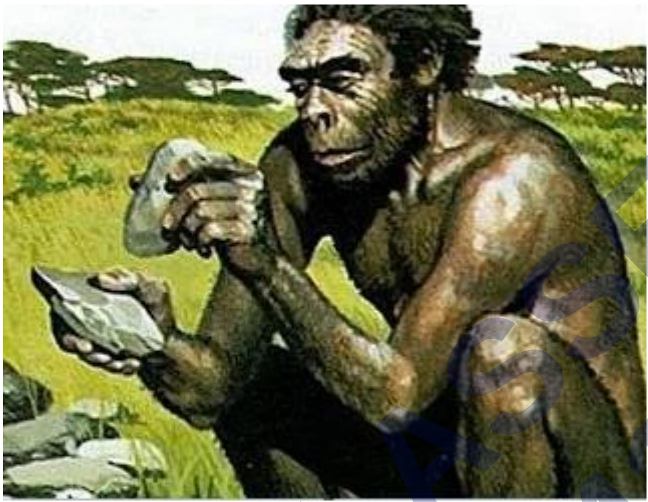

प्रचलित विधि लकड़ी के पटरे पर लकड़ी की छड़ रगड़ने की है और प्राचीन भारत में भी इस विधि का प्रचलन था। इस यंत्र को अरणी भी कहते थे इस विधि से आग उत्पन्न करना भारत के अतिरिक्त श्रीलंका , सुमात्रा, आस्ट्रेलिया और दक्षिणी अफ्रीका में भी प्रचलित था।

और सन् 1830 के बाद से दियासलाई का आविष्कार हो जाने के कारण आग प्रज्वलित रखने की विधि आई थी और आज मानव जीवन में आग के बहुत उपयोग है यदि आग नही होती तो मानव जीवन इतना सरल नही होता और जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ी, लोग आग के सहारे ही अधिकाधिक ठंडे देशों में रहने लगे |

बदलती जलवायु

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

लगभग 12,000 साल पहले दुनिया की जलवायु में बड़े बदलाव आए और गर्मी बढ़ने लगी। इसवेफ परिणामस्वरूप कई क्षेत्रों में घास वाले मैदान बनने लगे।

इससे हिरण, बारह सिंघा, भेड़, बकरी और गाय जैसे उन जानवरों की संख्या बढ़ी, जो घास खाकर शिन्दा रह सकते हैं। जो लोग इन जानवरों का शिकार करते थे, वे भी इनवेफ पीछे आए और इनवेफ खाने-पीने की आदतों और प्रजनन वेफ समय की जानकारी हासिल करने लगे। हो सकता है कि तब लोग इन जानवरों को पकड़ कर अपनी शरूरत वेफ अनुसार पालने की बात सोचने लगे हों। साथ ही इस काल में मछली भी भोजन का महत्वपूर्ण ड्डोत बन गई।

खेती और पशुपालन की शुरुआत

आरंभिक काल में खेती और पशुपालक की सुरूवात दक्षिण एशिया का एक और पुराना नियोलिथिक साइट 7000 ई. पू. का मेहरगढ़ है। यह "पाकिस्तान के बलूचिस्तान के काची के मैदान में स्थिति

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

है और यह दक्षिण एशिया में खेती (गेंहूं और जौ) और पशुपालन (मवेशी, भेड़ और बकरियां) की दृष्टि से सबसे आरंभिक साइटों में से एक है।

पशुपालन की शुरुआत

लगभग 12000 साल पहले पृथ्वी पर तापमान में वृद्धि के कारण घास के मैदानों और जानवरों का विकास हुआ था। शिकार करने और कुछ जानवरों को खाने के बजाय वृद्ध पाषाण युग के आदमी

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

के गहन अवलोकन के बाद उन्होंने उन्हें पकड़ लिया और उनका पालन-पोषण किया। इस तरह से पशुपालन और डेयरी फार्मिंग की शुरुआत हुई।

पशुपालन कृषि की वह शाखा है जो जानवरों से संबंधित है जो मांस, फाइबर, दूध या अन्य उत्पादों के लिए उठाए जाते हैं। इसमें दिन-प्रतिदिन की देखभाल, चयनात्मक प्रजनन और पशुधन का पालन-पोषण शामिल है। पशुपालन का एक लंबा इतिहास है, जो नियोलिथिक क्रांति के साथ शुरू होता है, जब जानवरों को पहली बार पालतू बनाया गया था, लगभग 13,000 ईसा पूर्व से, पहली फसलों की खेती से पहले। प्राचीन मिस्र जैसी प्रारंभिक सभ्यताओं के समय तक, मवेशियों, भेड़ों, बकरियों और सूअरों को खेतों पर उठाया जा रहा था।

पशुपालन

सामान्यत: नवम्बर में सिंधु सभ्यता में फसल बोयी जाती थी और अप्रैल में काटी जाती थी। खेती में पत्थर एवं कांसा के औजार प्रयुक्त किये जाते थे। कालीबंगा में प्राक् हड़प्पा अवस्था के हल से जुते हुए खेत का साक्ष्य मिलता है। बनवाली में मिट्टी के बने हुए हल का एक खिलौना प्राप्त हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है कि सिन्धु सभ्यता में हल लकड़ी के बने होते थे। सर्वप्रथम कपास की खेती सिंधु सभ्यता में ही शुरू हुई। इसलिए यूनानी लोग इसे सिण्डन कहते थे। पेड़-पौधों में पीपल, खजूर, नीम, नींबू एवं केला उगाने के साक्ष्य मिलते हैं।

महत्त्वपूर्ण फसलें- गेहूँ की दो या तीन प्रजातियां प्रचलित थीं-

1.ट्रिटीकम कम्पेक्टम

2.**ट्रिटिकम** स्फेरोकम

जौ की दो प्रजातियां प्रचलित थीं-

1.होरडियम वल्गैर

2.हेक्सास्टिकम्

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

इनके अतिरिक्त राई, मटर, तिल, खजूर, सरसों, कपास, चना। रागी उत्तर भारत के किसी भी स्थल से प्राप्त नहीं होता है। चावल की खेती गुजरात और संभवत: राजस्थान में होती थी। लोथल एवं रंगपुर से मृण्मूर्ति में धान की भूसी लिपटी हुई मिली है। गुजरात के लोग हाथी पालते थे।

सिन्धु सभ्यता में कृषि के साथ पशुपालन का भी महत्त्वपूर्ण स्थान था। उत्खनन में उपलब्ध बहुसंख्यक पशु-अस्थि अवशेषों, मुहरों पर अंकित पशु आकृतियों तथा मिट्टी की असंख्य पशु-मूर्तियों से पशु-पालन के संकेत मिलते हैं। उत्खनन में प्राप्त अवशेषों से पता चलता है कि इस समय लोग दूध देने वाले पशु यथा गाय, भेड़, बकरी आदि के अतिरिक्त भैंस, सुअर, हाथी तथा ऊँट आदि पालते थे। पालतू पशुओं में कुबड़दार वृषभ का भी महत्त्व था। ये लोग घोडे से परिचित थे या नहीं, यह कहना कठिन है। लोथल से प्राप्त एक ऋणमयी घोड़े की आकृति से ऐसा प्रतीत होता है कि ये लोग घोड़े से परिचित थे। इसी प्रकार ये लोग कुत्ता, बिल्ली तथा सुअर से भी परिचित थे।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 22)

प्रश्न 1 इन वाक्यों को पूरा करो

(क) आखेटक-खाद्य संग्राहक गुफाओं में इसलिए रहते थे क्योंकि ....

(ख) घास वाले मैदानों का विकास .... साल पहले हुआ।

उत्तर –

(क) यहां उन्हें वर्षा, धूप और हवाओं से राहत मिलती थी,

(ख) 12,000।

प्रश्न 2 खेती करने वाले लोग एक ही स्थान पर लंबे समय तक क्यों रहते थे ?

उत्तर – जब लोग खेती करने लगे, तो उन्हें अपनी खेती की देखभाल करने के लिए एक ही स्थान पर लंबे समय तक के लिए रहना पड़ा। बीज बोने से लेकर फसल के पकने तक लंबा समय लग जाता था। इस अवधि के दौरान पौधों की सिंचाई करना, खरपतवार हटाना, जानवरों और चिड़ियों से उनकी सुरक्षा करने जैसे बहुत-से काम करने होते थे। .

प्रश्न 3 पुरातत्वविद ऐसा क्यों मानते हैं कि मेहरगढ़ के लोग पहले केवल शिकारी थे और बाद में उनके लिए पशुपालन ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हो गया ?

उत्तर – मेहरगढ़ आधुनिक पाकिस्तान में ईरान जाने वाले रास्ते में बोलन दर्रे के पास स्थित एक हरा-भरा समतल स्थान है। इस स्थान पर खुदाई के सबसे पहले स्तरों में हिरण तथा सूअर जैसे जंगली जानवरों की हड्डियां मिली हैं, जो यहां के लोगों के शिकारी होने का प्रमाण देती हैं। लेकिन खुदाई के बाद के स्तरों में भेड़-बकरियों तथा अन्य घरेलू मवेशियों की हड्डियां ज्यादा मिली हैं, जो हमें इस बात का संकेत देती हैं कि बाद के वर्षों में मेहरगढ़ के लोगों के लिए पशुपालन का व्यवसाय अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया था।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 23)

प्रश्न 4 आखेटक-खाद्य संग्राहक एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्यों घूमते रहते थे ? उनकी यात्रा और आज की हमारी यात्रा के कारणों में क्या समानताएं या क्या भिन्नताएं हैं ?

उत्तर – आखेटक-खाद्य संग्राहक के एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमने के मुख्य कारण अग्रलिखित थे

(1) वे लोग यदि ज्यादा दिनों तक एक ही स्थान पर रहते थे तो वे आस-पास के पौधों, फलों और जानवरों को खाकर समाप्त कर देते थे। इसलिए अधिक भोजन की तलाश में उन्हें दूसरे स्थानों पर जाना पड़ता था।

(2) जानवर अपने भोजन के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाते रहते थे। अतः इन जानवरों का शिकार करने के लिए भी लोग इनके पीछे जाया करते थे।

(3) मौसम के अनुसार उगने वाले पेड़-पौधों और फलों की तलाश में लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे।

(4) पानी की तलाश में लोग नदियों, झीलों और झरनों के किनारे बसने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे।

यात्रा के कारणों में समानताएं-

आज भी चरवाहे अपने जानवरों के लिए चारे और पानी की तलाश में एक-स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं।

यात्रा के कारणों में असमानताएं-

(1) वर्तमान का मानव स्वयं अनाज उगाता है। उसे भोजन के लिए स्थान-स्थान पर घूमना नहीं पड़ता।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

(2) वर्तमान में हम अलग-अलग स्थानों पर रहने वाले अपने मित्रों तथा रिश्तेदारों से मिलने के लिए यात्रा करते हैं।

(3) वर्तमान में व्यापार के लिए व्यापारी स्थान-स्थान पर घूमते हैं।

प्रश्न 5 आखेटक-खाद्य संग्राहक आग का उपयोग किन-किन चीज़ों के लिए करते थे ? क्या तुम आज आग का उपयोग इनमें से किसी चीज़ के लिए करोगे ?

उत्तर – आखेटक-खाद्य संग्राहक निम्नलिखित चीज़ों के लिए आग का उपयोग करते थे

(1) प्रकाश के लिए,

(2) मांस पकाने के लिए, .

(3) खतरनाक जानवरों को दूर भगाने के लिए।

वर्तमान समय में मनुष्य प्रकाश के लिए तथा मांस पकाने के लिए आग का प्रयोग करता है।

प्रश्न 6 कृषकों-पशुपालकों का जीवन आखेटक-खाद्य संग्राहकों के जीवन से कितना भिन्न था, तीन अंतर बताओ ?

उत्तर – कृषकों-पशुपालकों का जीवन आखेटक-खाद्य संग्राहकों के जीवन से भिन्न था जिसके तीन अंतर निम्नलिखित हैं

(1) कृषकों-पशुपालकों ने एक स्थान पर टिककर रहना शुरू कर दिया था, जबकि शिकारी-खाद्य संग्राहक एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकते रहते थे।

(2) कृषक-पशुपालक अन्न का उत्पादन करते थे, जबकि शिकारी-खाद्य संग्राहक जंगली जानवरों को मारकर या फल-फूल एकत्र करके अपने भोजन की व्यवस्था करते थे।

(3) कृषक-पशुपालक अन्न का भंडारण करते थे, जबकि शिकारी-खाद्य संग्राहक अन्न का भंडारण नहीं करते थे।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)